



2048 तक मछली प्रजातियों का वैश्विक अन्त

एक अध्ययन में पता चला है कि पहले ही 29 प्रतिशत मछली प्रजातियों का अन्त हो चुका है, और अत्यधिक मछली पकड़ने के कारण तथा उनके निवास स्थान खत्म होने के कारण समुद्री आहार में गिरावट आने की संभावना है।

यदि वैज्ञानिकों द्वारा दिये गये डाटा का विश्लेषण किया जाए तो पता चलता है कि समुद्री जीव विविधता-समुद्री मछली, शैल फिश (Shell Fish), पक्षी, पौधे, सूक्ष्म जीव आदि पहले ही 29 प्रतिशत कम हो चुके हैं। वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि 2048 तक सभी प्रजातियों का पतन होने की सम्भावना है तथा अधिकतम उत्पादन का 90 प्रतिशत कम हो जाएगा। यह सभी प्रजातियों जैसे कि मसलज (Mussels), कलैम्ज (Clams), टूना और स्वोर्ड फिश (Sword Fish) पर लागू होता है। समुद्र में रहने वाले स्तनपायी जैसे कि सील, किलर व्हेल और डॉल्फिन्स भी प्रभावित होती हैं। समुद्री जैव-विविधता के पतन का मुख्य कारण अत्यधिक मछली पकड़ना और आवासों का नष्ट होना है। जैव-विविधता में कमी आने के कारण समुद्री पारिस्थितिक तन्त्र वैश्विक जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण तथा अत्यधिक शोषण जैसे प्रभावों से उभरने में कम सक्षम रहता है। एक विविध समुद्री पारिस्थितिक तन्त्र की अलग-अलग प्रकार के निवेशों के साथ तुलना की जा सकती है। समुद्र में अनेक प्रकार की प्रजातियों का होना अलग-अलग प्रकार के निवेशों के समान है जिसमें आप जोखिम को बांट देते हैं। समुद्र में प्रजातियों का लुप्त होना उत्पादन और स्थिरता को कम करता है। स्थिरता कम होने के कारण तन्त्र की आत्मा सुधार प्रणाली कमजोर पड़ जाती है। समाप्त क्षेत्रों के पुनः निर्माण के लिए 'मराइन लाइफ रिजर्व' तथा 'नो फिशिंग जोन' स्थापित करने की जरूरत है। जो तटीय समुदाय मछली पकड़ने के व्यवसाय से जुड़े हैं, उनके साथ-साथ अनेक पर्यावरणीय लाभ हैं, जो समुद्री जैव विविधता के बढ़ने से होते हैं। क्षतियस्त

तटीय पारिस्थितिक तन्त्र आक्रामक प्रजातियों, बिमारियों का फैलना, बाढ़ आना तथा हानिकारक शैवाल जमना जैसी समस्याओं का शिकार होता है।

प्रजातियों का विलुप्त होना :-

इकोलोजिस्ट और अर्थशास्त्रीयों के एक अन्तर्राष्ट्रीय समूह ने बताया है कि जैव विविधता में कमी आने के कारण समुद्र की समुद्रीय भोजन उत्पादन, प्रतिरोधक क्षमता, प्रदुषकों को दूर करना तथा अत्याधिक मछली पकड़ना और जलवायु में परिवर्तन जैसे तनावों से जूझने की क्षमता कम हो जाती है। वर्तमान रूप में समुद्रीय संसाधनों का अत्यधिक शोषण के कारण वर्ष 2050 से पहले समुद्री भोजन लगभग समाप्त हो जाएगा। हर प्रजाति महत्वपूर्ण है।

मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता :-

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय की स्टीव पॉलम्बी कहते हैं कि यदि हम मौलिक रूप से समुद्री प्रजातियों को एक साथ नियन्त्रित करना नहीं सीखेंगे, तो यह समुद्री भोजन की अन्तिम शताब्दी होगी। पॉलम्बी कहते हैं कि समुद्र एक महान पुनः आवर्तक है यह मल को लेकर उसे पोषक तत्वों में बदल देता है, विषैले पदार्थों को पानी से बाहर करता है, खाद्य पदार्थ उत्पादित करता है, तथा कार्बन डाई-आक्साइड को भोजन और ऑक्सीजन में परिवर्तित करता है। परन्तु यह सभी कार्य करने के लिये समुद्र को उसके सभी भागों की आवश्यकता होती है जैसे कि लाखों पौधे और पशु प्रजातियां जो उसमें निवास करती हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि सबसे अहम प्रश्न क्षतिपूर्ति का है। यदि प्रजातियां बहुत अधिक विलुप्त न हुईं तो यह सम्भव है परन्तु कुछ प्रजातियां जैसे एटलांटिक कोड (Atlantic Cod) के पुनः प्राप्त करना सम्भव नहीं है। आंकड़े बताते हैं कि अभी भी देर नहीं हुई है और अनेक प्रजातियों को एक से दस सालों के भीतर दोबारा सुरक्षित देख पायेंगे।